ही महिला उत्थान के लिये व्यवस्थित रूप में आन्दोलन चलाया। महिला की समस्याओं को लेकर आन्दोलन किये गये।

18वीं शताब्दी संक्रमणकाल का एक ऐसा दौर था जहाँ परिवर्तन के विभिन्न आयाम सामने उभर कर आ रहे थे। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में परिवर्तन हो रहे थे। ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजी शिक्षा को जहाँ प्रोत्साहित किया गया, वहीं उदारवादी विचार भी पनपने लगे। ईसाई मिशनरियों ने शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में कार्य करके यहाँ के लोगों को प्रभावित किया। भारतीय भी उच्च शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से प्राप्त करने लगे। इनके सोचने का ढंग व्यापक, विशाल और उदारवादी था। इन सबका परिणाम यह हुआ कि 19वीं सदी में अनेक प्रकार के सुधार आन्दोलन आरम्भ हुए। इन आन्दोलनों में मुख्य भूमिका पुरुषों की रहीं। 19वीं शताब्दी में सुधार आन्दोलन के प्रणेता **राजा राम मोहन** हैं। उन्हें पुनर्जागरण आन्दोलन के पिता के रूप में स्मरण किया जाता है। राजा जी ने स्त्री समाज की उन कुरीतियों को समाप्त करने का सकंल्प लिया जो स्त्री-समाज के लिये और साथ ही भारत के लिये कंलक बने हुए थे। इसका मुख्य कारण यह था कि राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना इतनी नहीं विकसित हुई थी कि वह धर्म को प्रभावित कर सके। 19वीं सदी में धर्म की परख सामाजिकता की कसौटी पर की जाने लगी। राजा जी ने समाज को एक नयी दिशा प्रदान की। ब्रिटिश शासन काल में राजा जी ने महिलाओं की समस्याओं को लेकर आन्दोलन आरम्भ कर दिया। इसमें मुख्य थीं सती-प्रथा, विधवाओं के साथ दुर्व्यवहार, विधवा पुनर्विवाह निषेध, बाल-विवाह, बहुपत्नी विवाह की प्रथा, स्त्री को सम्पत्ति के अधिकार से वंचित रखना। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर भी जोर दिया। सती-प्रथा के विरूद्ध इतना व्यापक आन्दोलन छेड़ा गया कि 1829 ई. में लार्ड विलियम बैंटिक ने सती-प्रथा को गैर कानूनी घोषित कर दिया, साथ ही इसके विरूद्ध कानून बना दिया। इसका पूरा का पूरा श्रेय राजा जी को है। इसी प्रकार राजा जी के समय कुलीन ब्राह्मण अनेक विवाह करते थे। इन्होंने इसका विरोध किया कि एक पत्नी के रहते हुए पुरुष को दूसरा विवाह नहीं करना चाहिए। इसे शास्त्रों के आधार पर उन्होंने प्रमाणित भी किया। उन्होंने महिला को सम्पत्ति पर अधिकार दो, इस पर नोटस भी लिखे।

इसमें दो राय नहीं है कि भारत में सुधार आन्दोलन 14वीं शताब्दी से 17वीं सदी तक विभिन्न सन्तों ने सामाजिक धार्मिक कुरीतियों के निराकरण हेतु अनेक प्रयास किये। इन सन्तों ने जातिवाद, अस्पृश्यता, धार्मिक संकीर्णता, मूर्ति पूजा, बहुदेववाद आदि की कटु आलोचना की। राजा जी के चलाये आन्दोलन की विशेषता यह है कि उन्होंने धार्मिक सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने के लिए व्यवस्थित और योजनाबद्ध रूप से आन्दोलन चलाए। स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में भी पुरुषों ने अद्वितीय कार्य किये। बालिकाओं के लिये स्कूल और कालेज खोले गये। इनके लिये छात्रावास बनवाये गये। विधवा आश्रम खोले गये आदि। क्योंकि सुधारवाद आन्दोलन से जुड़े लोग यह महसूस करने लगे कि एक अशिक्षित पत्नी और शिक्षित पति के मध्य अनेक स्तरों पर दूरी होती है, इसलिये परिवार और स्त्री दोनो का

Scanned with CamScanner

विकास सम्भव नहीं है। अस्तु स्त्री-शिक्षा पर ज़ोर दिया गया।

राजा जी ने समाज और महिला समाज की कुरीतियों के समाधान के लिये ब्रह्म समाज की स्थापना की जिससे व्यवस्थित रूप में आन्दोलन को चलाया जा सके और महिला समाज की बुराइयों को दूर किया जा सके। केशवचन्द्र सेन ने भी स्त्री-शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया। इसी समय बंबोधिनी पत्रिका भी प्रकाशित की गयी। अन्तरजातीय विवाह को भी प्रोत्साहित किया गया। बह्म समाज द्वारा इस प्रकार के विवाह को प्रोत्साहित किया जाता था। इस तरह राजा राम मोहन राय ने जहाँ स्त्री-आन्दोलन को एक नया स्वरूप प्रदान किया, वहीं महिलाओं को अपने समाज की कुरीतियों के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा भी दी।

राजा राम मोहन राय के पश्चात **केशवचन्द्र सेन,** जो ब्रह्म समाज में सक्रिय रूप से भाग लेते थे, आगे चलकर आपने भी महिला समाज के उत्थान के लिये कार्य किये। केशवचन्द्र सेन का साथियों से मतभेद होने के कारण उन्होंने अपनी पृथक संस्था की स्थापना की जिसका नाम 'सोशल रिफार्म एसोसिएशन' था। इस संस्था ने नारी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु दो स्कूल खोले। स्त्री-शिक्षा का मूल उद्देश्य यह था कि ये सामाजिक धार्मिक विषयों पर स्वयं विचार करें, स्त्री-जगत की कुरीतियों का समाधान ढूंढें और उन पर सामूहिक रूप से विचार करें। वे इस प्रकार की गोष्ठियां स्कूल में आयोजित करते थे। जिनका उद्देश्य था कि स्त्री भी पुरुष की तरह कर्मठ बने और प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों की तरह कार्य करे। सेन की शिक्षा-दीक्षा अंग्रेजी ढंग से हुई थी। इसलिये वे प्रगतिशील थे। अस्तु वे स्त्रियों को कूपमण्डूप बनायें रखने के पक्षधर नहीं थे। इसी प्रकार केशवचन्द्र ने बाल विवाह के विरूद्ध भी आन्दोलन किये और विधवा-पुनर्विवाह निषेध का भी विरोध किया। इस तरह राजारामोहन राय के स्त्री सुधार कार्यो को केशवचन्द्र ने आगे बढ़ाया।

'ब्रह्म समाज' के प्रभाव से महाराष्ट्र में 1867 में **'प्रार्थना समाज'** की स्थापना हुई। इस संस्था के भी लगभग वहीं उद्देश्य थे जो ब्रह्म समाज के थे। इसके प्रभावशील और सक्रिय सदस्य महादेव गोविंद रनाडे, सर आर.जी. भण्डारकर और नारायण चन्द्रावरकर थे। 1869 में 'बम्बई विधवा सुधार समिति' की स्थापना हुई जिसने 1869 में सर्वप्रथम विधवा पुनर्विवाह का प्रबंध किया। 1916 में बम्बई में आर.जी. भन्डारकर और एन.जी. चन्द्रावरकर को महिला विश्वविद्यालय के कुलपति होने का गौरव प्राप्त है। बाद में इसी का नाम एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय कर दिया गया। इन शिक्षा संस्थाओं का उद्देश्य था कि महिला-शिक्षा इस प्रकार की हो कि वे भी पुरुषों की तरह योग्य और सक्षम बनें। आधुनिक शिक्षा का लाभ महिला को भी प्राप्त हो सके। इस तरह 'प्रार्थना समाज' महिला शिक्षा को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विकसित करने का श्रेय लेती है। 'प्रार्थना समाज' ने महिला उत्थान के लिये निम्नलिखित कार्य किये। इसने महिला आन्दोलनों को एक नयी जमीन दी-

Scanned with CamScanner

1. बाल-विवाह पर प्रतिबन्ध लगाया जाय।
2. स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाय।
3. विधवा-पुनर्विवाह का समर्थन किया गया।
4. विधवा-आश्रम की स्थापना करना और
5. स्त्रियों को सामाजिक एवं सम्पत्ति संबंधी अधिकार दिलाना।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का **'आर्य समाज'** और स्वामी जी की महिलाओं के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका है। वास्तव में, स्वामीजी उन विचारकों में से थे जिन्होंने धार्मिक कट्टरता और रुढ़िवादी अन्धविश्वासों पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने एक पत्नी के रहते हुए दूसरे विवाह की अनुमति नहीं दी। द्वितीय विवाह केवल विशेष परिस्थितियों में ही किया जा सकता है। स्वामी जी स्त्री शिक्षा में क्रांति के द्योतक हैं। उन्होंने शिक्षा जगत में, यह कहकर कि सभी वर्ण की महिलायें शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं तहलका मचा दिया। इसके लिये उन्होंने आन्दोलन भी किया। वे इस बात के विरोधी थे कि शूद्र वर्ण की स्त्रियों को धर्म ग्रन्थ पढ़ने न दिया जाय। उन्होंने वेदों के आधार पर यह प्रमाणित कर दिया कि शूद्रों को वेदाध्ययन करने का अधिकार है। वे प्रश्न करते थे कि क्या ईश्वर शूद्रों के लिये नहीं है? क्या ईश्वर केवल ब्राह्मणों के लिये ही है? वास्तव में, स्त्री शिक्षा जगत में स्वामी जी ने सभी वर्णों की स्त्रियों के लिये जो आन्दोलन चलाया, वह अद्वितीय है। ईश्वरचन्द्र विद्या सागर और महात्मा ज्योतिबा फूले ने कहा कि महिलाओं के पिछड़े होने का कारण जाति व्यवस्था है। महिलाओं की समाज में, निम्न स्थिति और दशा का मूलाधार जड़वादी जाति व्यवस्था ही है जिसमें स्त्रियों को पनपने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता है। ज्योतिबा फूले अनमेल विवाह, बाल विवाह के विरुद्ध रहे हैं। विधवा विवाह को प्रश्रय देना उनकी सर्वोपरि प्राथमिकता रही है। उन्होंने महिला समाज की जड़ता और उनके शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द की। वे इस तथ्य से भली-भांति परिचित थे कि शिवाजी को योद्धा बनाने में उनकी माँ का ही हाथ था। इसलिये भावी पीढ़ियों के निर्माण में स्त्रियों की शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। वह भी दलित जातियों के लिये तो और भी आवश्यक है। यह निश्चय ही क्रांतिकारी विचार था। ज्योतिबा फूले ने अपने चिन्तन को व्यावहारिक रूप देने के लिये शूद्र और निम्न जातियों की स्त्रियों और बालिकाओं के लिये विद्यालय की स्थापना की।[10] इस तरह स्त्री शिक्षा के विकास में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

2. महिलाओं द्वारा आन्दोलन (Women's Movement)

जो. फ्रीमैन की यह बात किसी सीमा तक उचित प्रतीत होती है कि सामाजिक आन्दोलन का विषय समाजशास्त्र में उपेक्षित रहा है। सामाजिक आन्दोलन के सिद्धान्तवादियों ने भी

10. के. चंचरीक महात्मा ज्योतिबा फुले, पृष्ठ 34.

Scanned with CamScanner

इसकी उत्पत्ति के संबंध में कुछ नहीं कहा। वे केवल सामाजिक आन्दोलनों के कारणों का विश्लेषण करते रहे।[11] इसीलिये **डेहरनडोरफ** ने कहा कि समाजशास्त्री सामान्यतया घटना की उत्पत्ति के संबंध में रुचि नहीं रखते क्योंकि ये एक बृहत्तर रूप में विकसित होते हैं।[12] **जो. फ्रीमैन** भी यह कहते है कि सामाजिक आन्दोलन की उत्पत्ति के तत्वों को सामान्यतया भुला देते हैं अथवा उसे तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है। वैसे सामाजिक आन्दोलन के आरम्भिक समय का विश्लेषण करना एक दुरुह कार्य है।[13] वास्तव में, महिला मुक्ति आन्दोलन अनेक समूहों, अनेक प्रकार के और संगठनों के द्वारा चलाये जाते रहे हैं। इनका कोई बुनियादी ढांचा नहीं था जिसके आधार पर महिला आन्दोलन की इमारत खड़ी होती किन्तु समय के साथ महिला आन्दोलन का एक निश्चित स्वरूप बना। इसने महिलाओं से जुड़ी असंख्य समस्याओं को लेकर आन्दोलन आरम्भ किये।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला आन्दोलन महिला समस्याओं को लेकर ही किये गये हैं। आज भी इनका इसी आधार पर संघर्ष जारी है। इसमें सन्देह नहीं है कि ब्रिटिश शासन काल में जहाँ अनेक परिवर्तन हुए, वहीं नारी जगत में भी अपने अस्तित्व को लेकर जिस चेतना का विकास हुआ उसने स्त्री आन्दोलन को बल भी प्रदान किया और प्रेरणा भी। इसलिये **ए.आर.देसाई** का विचार है कि-

> "सामाजिक अस्तित्व की स्थिति में जो समाज सुधार आन्दोलन उद्भूत हुए, उनका एक लक्ष्य यह भी था कि भारतीय नारी जिन सामाजिक और न्यायिक विषमताओं एवं अनीतियों की शिकार है, उन्हें दूर किया जाय।[14]"

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला मुक्ति आन्दोलन 1960 के दशक में, मुख्यतया, अमेरिका में आरम्भ हुए। इस शताब्दी में जुझारू महिलायें सामाजिक अधिकार के लिये संघर्ष कर रही थी। सभी के लिये बालिग मताधिकार समान हों। इसमें किसी प्रकार का लैंगिक भेद न किया जाय। इन आन्दोलनों से महिलाओं को अनेक सफलतायें भी प्राप्त हुई जैसे ब्रिटेन में 1970 में समान वेतन एक्ट पारित किया गया। इसी प्रकार 1975 में लैंगिक विभेद का एक्ट। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे ही महिला मुक्ति का अधिकार स्त्रियों को प्राप्त हुआ स्त्री आन्दोलन की गति भी बढ़ने लगी।[15] कम से कम विदेशों में इन महिला आन्दोलनों से भारत में आन्दोलन को शक्ति प्राप्त हुई।

भारत में महिलाओं द्वारा अनेक आन्दोलन चलाये गये। लेकिन यह भी उतना ही सत्य

---

11. जो. फ्रीमैन, सोशालजी आफ डिसेन्ट, पृष्ठ 188.
12. डेहरनडॉर्फ, वही, पृष्ठ 189.
13. जो. फ्रीमैन, सोशालजी आफ डिसेन्ट, पृष्ठ 190.
14. ए.आर.देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 219.
15. एम. हरलम्बोबस, सोशालजी, पृष्ठ 403.

Scanned with CamScanner

है कि पुनर्जागरण आन्दोलन के नेताओं और समाज सेवकों ने नारी समस्याओं को लेकर जो आन्दोलन किये उन से भारतीय स्त्रियों को आन्दोलन चलाने में प्रेरणा मिली। उन्होंने अवस्थित रूप से महिला संगठन बनाकर आन्दोलन किये। वास्तव में, यह इतना बड़ा विषय है कि इस पर एक भारी भरकम पुस्तक लिखी जा सकती है। अस्तु यहाँ पर मुख्य महिला आन्दोलनों से सम्बन्धित कुछ जानकारियाँ ही दी जा रही हैं :

20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में स्त्रियों ने यह महसूस किया कि उनका एक सामाजिक संगठन होना चाहिये जो नारी जगत के उत्थान के लिये कार्य कर सके। यह भी अनुभव किया गया कि यह संगठन स्त्रियों के द्वारा ही संचालित किया जाय। इस तरह 1910 और 1920 के मध्य अनेक स्त्री संगठनों की स्थापनायें हुई जिन्होंने स्त्रियों के उत्थान के लिये महत्त्वपूर्ण कार्य किये। इनमें मुख्य हैं **'महिला समिति', 'वीमन्स क्लब', 'वीमन्स इण्डियन एसोसियेशन'**, (1917) इन महिला संगठनों के पीछे सुधारवादी आन्दोलन की प्रेरणा समाहित है जिसने नारियों को घर से निकलने का प्रेरणा दी। उन्हें जागरुक बनाया। स्त्रियों की ज्वलन्त सामाजिक कुरीतियों के समाधान के लिये उन्हें तैयार किया। इन महिला संगठनों की क्रियाकलापों ने महिला संगठनों को राष्ट्रीय स्तर प्रदान किया। हजारों महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में मुक्त होकर भाग लिया। इसीलिये इस आन्दोलन को महिला आन्दोलन की भी संज्ञा दी गई।[16] महिलाओं ने यह गंभीरता से सोचना आरम्भ कर दिया कि उनका अखिल भारतीय स्तर पर एक महिला संगठन होना चाहिए जिसका नेतृत्व महिलायें करें। महिलाओं की समस्याओं का निराकरण भी इसी संगठन द्वारा किया जाय। इस दृष्टि से **सरला देवी चौधरी** ने **'भारत स्त्री महामन्डल'** की स्थापना की।

स्त्री आन्दोलन में दो योग्य, शिक्षित, सम्भ्रान्त महिलाओं का योगदान काफी महत्वपूर्ण है। इनकी सक्रियता से महिला आन्दोलन को गति भी प्राप्त हुई और दिशा भी। सरोज नलिनी दत्त जिन्होंने बंगाल में और **'महिला समिति'** की स्थापना की और दूसरी प्रसिद्ध महिला **सरोजनी नायडू** जिनकी अपनी पहचान सम्पूर्ण भारतवर्ष में थी। वे सामाजिक और राजनीतिक दोनों स्तरों पर सामान्य रूप से कार्य करती थीं। ये दोनों ही भद्र महिलायें स्त्रियों को उनकी नयी भूमिका के बारे में बताती और उनके उत्तरदायित्व बताती, उन्हें प्रेरित करती कि वे संगठन में शामिल हों और क्रियाकलापों में सहभागी बने।[17]

सरोज नलिनी को बंगाल के गांवों की महिलाओं के दुःख ने अन्दर तक झकझोर दिया। अशिक्षित, निर्धन और परेशानियों व समस्याओं से ग्रस्त महिलायें अपने भाग्य को कोसती थी। इसलिये नलिनी ने यह निर्णय लिया कि एक महिला संगठन की आवश्यकता है जिसमें महिलायें एक दूसरे से मेल मुलाकात करें। अपनी समस्याओं पर चर्चा करें। इसे ध्यान में रखते हुए उन्होंने प्रथम 'महिला समिति' की स्थापना 1913 में पबना में की। पबना

16. जनमेजय सिंह, समकालीन भारतीय समाज, पृष्ठ 152.
17. एम.एस.ए. राव, भारत में सामाजिक आन्दोलन, पृष्ठ 367.

Scanned with CamScanner

के पश्चात वीर भूमि (1916), सुलतानपुर (1917), रामपुरहट (1918) और बाकुड़ा में की।[18] इस तरह नलिनी ने महिला समिति के जैसे संगठन को अन्य नगरों में भी स्थापित करने का श्रेय प्राप्त किया। इस समिति ने जहाँ महिला जागृति में अहम् भूमिका अभिनीत की वहाँ महिलाओं को अपनी समस्याओं को समझने एवं सुलझाने के योग्य ही नहीं बनाया वरन् उनमें एकजुटता की भावना भी उत्पन्न की। 1935 में अल्पायु में ही सरोज नलिनी नहीं रहीं। उनके पति ने उनकी याद में एक संस्था की स्थापना की 'सरोज नलिनी दत्त मेमोरियल एसोसियेशन फार वीमनस वर्क इन बंगाल'। इसने अपने कार्य क्षेत्र को काफी व्यापक बना लिया। इसने हस्तशिल्प और दाई और बच्चों के क्लीनिक्स खोले। ऐसे स्कूल आरम्भ किये जिसमें गृह विज्ञान पढ़ाया जाता था। नलिनी ने परम्परावादी और रूढ़िवादी लोगों से जमकर मोर्चा लिया। उनके आरोपों को तर्कों द्वारा खण्डन-मण्डन किया। इस तरह सरोज नलिनी की स्त्री आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका ही नहीं वरन् नारी चेतना को प्रोत्साहित करने में भी है।

सरोजनी नायडू का व्यक्तित्व और कार्य क्षेत्र दोनों ही काफी व्यापक हैं। आपकी पहचान सम्पूर्ण भारत में थी, फिर भी दोनों की स्त्री आन्दोलन में भूमिका किसी से कम नहीं थी। दोनों का लक्ष्य समान था।

सरोजनी नायडू का विचार था कि महिलायें सामाजिक कार्यों और राजनीति के द्वारा समाज में एक अहम् भूमिका अदा कर सकती हैं। नायडू ने सम्पूर्ण भारत की महिलाओं के उत्थान और कल्याण के लिये कार्य किया है। वे सामाजिक एवं राजनैतिक दोनों प्रकार के संघों से समान रूप से जुड़ी थीं। उनका मत था कि महिलाएँ 'महिला समिति' के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करें। घर से बाहर निकलकर सामाजिक क्षेत्र में कार्य करें। नायडू ने सम्पूर्ण बंगाल की महिलाओं को आन्दोलन करने की प्रेरणा दी। सरोजनी नायडू भारत के विभिन्न नगरों में छात्रों और समाज सुधार समितियों में भाषण देती, उन्हें प्रेरित करती कि वे राष्ट्र के लिये कार्य करें। सरोजनी नायडू का महत्वपूर्ण योगदान यह भी है कि उन्होंने महिलाओं को राष्ट्रीय आन्दोलन से भी जोड़ा। ब्रिटिश शासन में नारी चेतना को जागृत करना निश्चय ही अपने में एक महत्वपूर्ण कार्य है।

अखिल भारतीय महिला परिषद्

महिला आन्दोलन में अखिल भारतीय महिला परिषद् की भूमिका को नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता है। इस परिषद ने सम्पूर्ण भारत में हलचल मचा दी। महिलाओं को एक जुटकर एक मंच पर ले आयी। बम्बई में, 1920 में 'अखिल भारतीय महिला परिषद' की स्थापना की गई। इसने सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। इसने

18. एम.एस.ए. राव, भारत में सामाजिक आन्दोलन, पृष्ठ 368.

Scanned with CamScanner

जहाँ घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित किया, वहीं महिला शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया। इसके साथ ही संसदीय समिति जैसे राजनीतिक कार्यक्रमों को भी प्रोत्साहित किया। सबसे महत्त्वपूर्ण घटना 1926 में हुई जब अनेक महिला संगठनों ने एक जुटता का परिचय देकर, सबने परस्पर मिलकर, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया। इसके पश्चात महिला परिषद का सम्मेलन निरन्तर किसी न किसी नगर में आयोजित किया जाने लगा। इस परिषद् की यह भी विशेषता थी कि इसमें विदेशी महिलायें भी हिस्सा लेती थीं और अपने विचार प्रकट करती थीं। इसके साथ ही वे भारतीय महिलाओं द्वारा जो प्रस्ताव परिषद् में प्रस्तुत किये जाते थे उनका अनुमोदन भी करती थीं।

लगभग प्रत्येक वर्ष अखिल भारतीय महिला परिषद् का आयोजन किसी न किसी नगर में आयोजित किया जाता था। इस आयोजन में मूलतः महिला समस्या व समाधान पर खुलकर विचार विमर्श किया जाता था। इन आयोजनों में कभी बाल विवाह की भर्त्सना की जाती तो कभी विवाह की आयु बढ़ाने के लिये सरकार को ज्ञापन दिया जाता। 1930 के आयोजन में शारदा अधिनियम का समर्थन किया गया जिसके अनुसार लड़के और लड़की एक निश्चित आयु के पश्चात ही विवाह कर सकते थे। महिलाओं की सम्पत्ति संबंधी अधिकार के लिये भी बहस की गयी। विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया जाय। लड़कियों को शिक्षित करने के लिये विशेष जोर दिया गया। महिला श्रमिक समस्याओं के निराकरण के लिये सुझाव दिये गये। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि अखिल भारतीय महिला परिषद् की स्त्री आन्दोलन में और स्त्री चेतना को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ ही महिलाओं की समसमायिक समस्याओं को समाज और सरकार के सम्मुख प्रस्तुत कर सराहनीय कार्य किया है। इस परिषद् का कार्य केवल नगर की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि ग्रामीण कल्याण,उत्थान और सुधार के कार्यों में संलग्न रहा है। इस दृष्टि से परिषद् का श्रेय अन्य महिला संगठनों की तुलना में कहीं अधिक है।

अखिल भारतीय महिला परिषद् के अतिरिक्त कई महिला संगठन भी सक्रिय रूप से महिलाओं की समस्याओं को लेकर आन्दोलन रत थे जिसमें मुख्य थे-हिन्दू महिला उद्धार गृह समाज, सर रतन टाटा औद्योगिक संस्थान, (1928) यह मूलतः पारसी महिलाओं के लिये ही था। 'ज्योति संघ' वगैर भेद-भाव के पीड़ित महिलाओं की सेवा करती। दयाल बाग महिला सहकारी संगठन (1938) इसकी स्थापना आगरा में हुई। इस संस्था ने महिला जगत में सराहनीय लेखन कार्य किया है। आज भी यह संस्था अपनी सेवाओं के लिये प्रसिद्ध है। यह संस्था महिलाओं को विभिन्न प्रकार की हस्तशिल्प कार्यों में प्रशिक्षित कर उन्हें स्वावलम्बी बनाती है। दीन-दुखी, पीड़ित महिलाओं की सहायता करती है। ऐसे विवाहों को प्रोत्साहित करती है जिसमें दहेज न दिया जाता हो और न लिया जाता हो।

महिला जागृति और महिला आन्दोलनों ने विश्व की महिलाओं को एक मंच पर लाकर स्त्री समस्याओं पर गहन विचार व मन्थन होने लगा। महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक स्थिति पर विचार किया जाने लगा। प्रबुद्ध महिलाऐं

Scanned with CamScanner